पंचकल्याणक महोत्सव तप कल्याणक पर बारह भावना की प्रस्तुति

1. अनित्य भावना

मेरा नाम अनित्य भावना है। चाहे जवानी हो, घर, मकान, रुपया, पैसा, धन, सम्पत्ति हो, प्यारी सी स्त्री हो, प्यारी सी संतान हो, क्यों दादू नाती पोते हो, पंचेन्द्रियों के विषय भोग हो, ये सभी पानी के बुलबुले के समान क्षणिक है, नष्ट होने वाले है । ये भोग, ये विलास, ये ऐश्वर्य आदि चार दिनों की चांदनी फिर अंधेरी रात जैसे है, देखो तुमने देखा होगा बच्चा जब जवान होता है तो उसका बचपन चला जाता है। जवान जब बूढ़ा होता है तो उसकी जवानी चली जाती है, एक दिन बूढ़ा भी चला जाता है। फिर किसका बचपन, किसकी जवानी, किसका बुढ़ापा, किसका मकान, किसकी दुकान एक दिन सब चला जाता है।

2. अशरण भावना

मेरा नाम अशरण भावना है। देव हो, इन्द्र हो, नागेन्द्र हो, बड़े-बड़े राजा महाराजा हो मौत ने इन सभी को अपनी गोद में सुला लिया है। माता, पिता, परिवार, डॉक्टर, वैद्य, हकीम ये सभी तुम्हें मौत से नहीं बचा सकते। जिस प्रकार सिंह हिरण को मारकर खा जाता है उसे बचाने कोई नहीं आता। इसी प्रकार चाहे तुम मंत्र कर लो, तंत्र कर लो, जादू टोना कर लो, देवताओं की उपासना कर लो। ये सभी तुम्हारी आयु का एक क्षण भी नहीं बढ़ा सकते है। भव्य प्राणियों! व्यवहार नय, ये देव, शास्त्र, गुरु ही शरण है तथा निश्चय नय से अपनी आत्मा ही शरण है। इस प्रकार अशरण भावना का चिंतन करके अपनी आत्मा की शरण को प्राप्त करो।

3. संसार भावना

मेरा नाम संसार भावना है। हे संसारी प्राणियों! तुम चारों गतियों के दुख भोगते रहते हो और पाँच प्रकार के परिवर्तन करते रहते हो। ये संसार तुम्हें मीठा-मीठा जरुर लगता है परन्तु इस असार संसार में राई के बराबर भी सुख नहीं है तुम टी. वी. में बीबी में, बच्चों में सुख को खोजते रहते हो किन्तु सुख इन सब में नहीं सुख तो अपनी आत्मा में है।ऐसी सुखमई, आनंदमयी, चेतनामई आत्मा को प्राप्त करो।

4. एकत्व भावना

मेरा नाम एकत्व भावना छै। मारी मम्मी नथी, पापा नथी, बेन नथी, भैया नथी, मकान नथी, दुकान नथी। आ दुकान, आ मकान, आ संसार, आ कुटुम्ब, आ बन्धु मिथ्या छै, जड़ छै, पर पदार्थ छै, गुरुदेव नो, उपदेशो हमरी समझ

मा आइबो कि संसार मा एकली आत्मा छै। एकत्व भावनानु चिंतन करो छै, अने शुद्ध आत्मा को पाओ छै, तमने गुरुदेव नी वीतरागी भेष सारु लागे, तमे भी दीक्षा लई लो ना, पूज्य महाराजनू, आठ बरसनी नानी छोरी तो दीक्षा लई सकत ना, मू भी आठ बरसनी थई गई, मने भी दीक्षा दई दो ना। पछी मू आत्मा नू चिंतन करुं छूं, ध्यान करुं छूं, अने शुद्ध आत्मा में रमूं छूं।

5. अन्यत्व भावना

मेरा नाम अन्यत्व भावना है। जब हम दूध और पानी को मिलाते है तब वह अच्छे मित्र की तरह घुल मिलकर एक हो जाता है तो भी दूध अलग है, पानी अलग है। इसी प्रकार शरीर अलग है आत्मा अलग है फिर मैं आपसे पूछती हूँ धन, मकान, रुपया, पैसा, दास, दासी, पुत्र, पुत्री आपके कैसे हो सकते है अर्थात् नहीं हो सकते। इसलिये तुम सभी शरीर और आत्मा में भेद करके अन्यत्व भावना का चिंतन करो।

6. अशुचि भावना

मेरा नाम छिःछिः छिः अशुचि भावना है। सुनो सभी ध्यान से सुनो आपका यह सुन्दर लाडला शरीर खून से, पीप से, छिः मांस से भरा पड़ा है हड्डी, चर्बी का घर है। तुम्हारे शरीर में नौ मल के द्वार है जिनसे हमेशा गंदगी बहती रहती है। इस गंदे घिनौने शरीर में 8 सेर रुधिर, 16 सेर मूत्र, 24 सेर विष्ठा भरा है। फिर ऐसे गंदे घिनौने शरीर में चाहे तुम खूब क्रीम लगाइलो, पाउडर लगाई लो, लिपिस्टिक लगाई लो, बालों में डाई करवाइलो, मूंछे काली करवाइलो, आई ब्रो बनवाईलो, मस्करा लगवाईलो, लो बेक्सिंग करवाइलो, फेसियल करवाइलो, ब्यूटी पार्लर चले जाओ फिर भी ये शरीर ईमानदारी से पेश नहीं आने वाला। इसलिये तुम सभी शरीर को सजाना छोड़ो और आत्मा को सजाने का प्रयास करो। तभी मुक्ति होगी

7. आस्रव भावना

मेरा नाम आस्रव भावना है। कर्मों के आने के द्वार को आस्रव कहते है। आस्रव दो प्रकार के है। पहला शुभ आस्रव दूसरा अशुभ आस्रव। अणुव्रतों का पालन करना, महाव्रतों का पालन करना, निज आत्मा का चिंतन करना ये सब शुभ आस्रव कहलाता है। यदि आप लड़ते है, झगड़ते है, झूठ बोलते है, परिग्रह इक्ट्ठा करते है, धुंआ उड़ाते हैं, जर्दा मलते है, गुटका पाउच आदि खाते है। अभक्ष्य खाते है, रात में खाते है, सप्त व्यसन करते है ये सब अशुभ आस्रव कहलाता है। अरे इस संसार में माता -पिता में झगड़ा, पिता -पुत्र में झगड़ा, भाई- भाई में झगड़ा, सास- बहू में झगड़ा, ननद-भौजाई में झगड़ा, थोड़े से जमीन के टुकड़े में झगड़ा, धन, मकान, जायदाद में झगड़ा, समाज में झगड़ा, कमेटी में झगड़ा, राजनीति में झगड़ा, जहां देखो वहां झगड़ा, झगड़ा, झगड़ा, झगड़ा। अरे यह झगड़ा तो अशुभ आस्रव कहलाता है। ऐसे अशुभ आस्रव को छोड़ो, दुनियादारी से नाता तोड़ो, पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर भगवन से नाता जोड़ो तो तुम्हारा कल्याण निश्चित है।

8. संवर भावना

मेरा नाम संवर भावना है। मैं कर्मों को रोकने का कार्य करता हूँ। मैं अशुभ उपयोग को बंध का कारण समझता हूँ, मेरी बात समझे आप ओ हो हो हो जब ज्ञानी आत्मा अपने अंदर कर्मों को रोकता जाता है तब कर्मों का संवर होता है फिर तुम सब सुखी होगे ही होगे।पूज्य महाराज श्री आप इनको दे दीजिए थोड़ी सी अक्ल, तो इनके अकल के ताले खुलेगें ही खुलेगें फिर यहां धर्म की गंगा बहेगी ही बहेगी। मैं संवर भावना का चिंतन करना चाहता हूँ और मोक्ष महल में झंडा फहराता हूँ।

9. निर्जरा भावना

मेरा नाम निर्जरा भावना है। कर्मों के एक देश क्षय होने को निर्जरा कहते है। हम दो बहिनें है। मेरी बहिन का नाम सविपाक निर्जरा है और मेरा नाम अविपाक निर्जरा मेरी बहिन जो सविपाक निर्जरा है ना, उससे दोस्ती करना ठीक नहीं है क्योंकि वह कर्मों से मार पड़वाती है, संसार में भटकाती रहती है और तुम सभी को लड़ाती रहती है। अतः मुझसे दोस्ती का हाथ बढ़ाओ और संयम धारण करके अविपाक निर्जरा करो तो तुम्हारी आत्मा से बंधे हुये कर्म शीघ्रता से झर जायेगे तथा तपस्या के बल से द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म को अपनी आत्मा से अलग करके अनंत सुख की प्राप्ति कर लो।

10. लोक भावना

मेरी पहचान लोक भावना है। छः द्रव्यों से बने इस लोक को न तुमने बनाया है, न हमने बनाया है, न किसी और ने बनाया है। इन तीन लोकों में अनंत जीव राग,द्वेष, मोह के कारण कई बार जन्म लेते है फिर मर जाते है। ये तीनों लोक ही असार है इसमें सारभूत कुछ भी नहीं है। फिर ऐसे तीनों लोको में कभी देव बनकर, कभी मनुष्य बनकर, कभी तिर्यंच बनकर, कभी नारकी बनकर दुखों को भोगते रहते है ऐसे दुख रुपी तीन लोको में जन्म लेना छोड़ो और अपना रथ मोक्ष महल की ओर मोड़ो।

11. बोधि दुर्लभ भावना

मेरा नाम बोधि दुर्लभ भावना है। अरे! भोले प्राणियों तुम कितने ही बार नव ग्रैवेयक तक गये परंतु वहां पर भी सम्यक् ज्ञान को नहीं पा सके फिर तुम्हें अपनी आत्मा का बोध कैसे हो पायेगा अर्थात् नहीं हो पायेगा, यह सम्यक् ज्ञान अपार सुख को देने वाला है। हे भव्य आत्मन्! जिस प्रकार बालू के समुद्र में गिरी हुई वज्र की कणिका का मिलना अत्यंत दुर्लभ है तथा अमावस्या की काली रात में यदि काले रंग का बाल खो जाये तो उसका मिलना अत्यंत दुर्लभ है। उसी प्रकार नरभव का मिलना अत्यंत दुर्लभ है।

12. धर्म भावना

मैं अंतिम भावना धर्म भावना हूं। हे सज्जनों मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान, मिथ्याचारित्र ये धर्म कहलाते है तथा सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र ये तीनों धर्म कहलाते है। '' चारितं खलु धम्मो '' निश्चय से चारित्र ही धर्म, ''वत्थु सहावों धम्मो '' वस्तु का स्वभाव ही धर्म है। '' उत्तम क्षमादि दस विहो धम्मो '' उत्तम क्षमादि दस प्रकार का धर्म है।

'' जीवाणाम् रक्षणम् धम्मो '' जीवों की रक्षा करना धर्म। '' हिंसा रहियो धम्मो '' हिंसा से रहित धर्म है। आचार्य श्री विद्यासागर गुरुदेव ने मूकमाटी में लिखा है ''धम्मो दया विशुद्धो'' दया से सहित धर्म है।
अतः आप सभी धर्म भावना का चिंतन करें और आत्म कल्याण करें।